**डॉ० शैलेन्द्र मोहन मिश्र**

**स० प्रा० मैथिली विभाग**

**सी०एम० जे० कॉलेज**

**दोनवारी हाट खुटौना**

**मो० न० 9546743796**

[**Email-mishrasm966@gmail.com**](mailto:Email-mishrasm966@gmail.com)

**B. A. III**

**शब्द शक्ति**

**शब्द अनादि अभिधेय सम्पूर्ण जगत कें अर्थ – बोध सेहो कहल जाइत अछि | वास्तवमे शब्दमे अपार अर्थकें व्यक्त करबाक शक्ति संचित रहैत अछि |**

**एहि लेल आचार्य लोकनि शब्द आ ओकर महत्वक सविस्तार पूर्वक वर्णन अपन – अपन काव्य – शास्त्रीय ग्रन्थ सभमे कएलनि अछि | भारतीय काव्य – शास्त्र मे शब्द – शक्तिक सम्बन्धमे पर्याप्त विचार विचार भेल अछि | व्याकरणशास्त्र , न्यायदर्शन , मीमांशादर्शन तथा साहित्य आदिमे शब्द तथा शब्द- शक्ति सभक सम्बन्धमे अनेक निर्णय कएल जा चुकल अछि | काव्यक परिभाषा मे सेहो प्राय: सभ आचार्य द्वारा शब्दार्थक संकेत भेटैत अछि | ई दुनू शब्द आ तकर शक्ति काव्यक शरीर अछि आ एकर भिन्न कल्पना संभव नहि अछि | कालिदास सेहो अपन ‘ रघुवंश ‘ काव्यक प्रारम्भ मे शब्द आ अर्थक एहि अटूट सम्बन्धक महत्ता प्रतिपादित कएने छलाह – ‘ वागर्थाविव संपृक्त्तो जगत: पितरौ पार्वतीपरमेश्वरौ’ | ‘ गोस्वामी तुलसीदास सेहो – ‘ गिरा अरथ जल बीचि सम कहियत भिन्न न भिन्न |’ अर्थात वाणी ( शब्द ) एवं अर्थ पानि आ ओकर लहरिक सदृश अछि जकरा भिन्न कहलो पर भिन्न नहि अछि | एतावता ज्ञात होइत अछि जे शब्द ज पानि अछि त अर्थ ओहुमे उठयबला लहरि | कवि इएह कहि कें शब्दार्थक अभिनत्वक घोषणा कएने छलाह | ई शब्द आ अर्थक रसवादी पक्ष अछि |**

**एकर तात्पर्य ई अछि जे शब्द तथा वाक्य सभक सार्थकता ओकर अर्थमे अछि | ई अर्थ जाहि शक्ति आ व्यापार द्वारा जानल जाइत अछि अर्थात जाहि शक्ति वा व्यापार द्वारा अर्थक बोध होइत अछि ओकरा शब्द – शक्ति कहैत अछि | एकरे दोसर शब्दमे कहल जाइत अछि जे शब्द तथा अर्थक सम्बन्धमे विचार करएवला तत्व कें शब्द – शक्ति कहल जाइछ | शब्द तथा वाक्यक सार्थकता ओकर अर्थमे होइछ | वैह शब्द शब्द कहबैत अछि जे अर्थवान हो | एहि हेतु जाहि शक्ति आ व्यापार द्वारा अर्थबोध होइत अछि ओकरा शब्द – शक्ति कहल जाइछ | ई शक्ति अर्थबोधक व्यापारक मूल कारण सेहो कहबैत अछि |**

**काव्यशास्त्रक अनुसार शब्दक शक्ति असीम अछि | शब्द उच्चारणक हमरा मोन , कल्पना आ अनुभूति पर प्रभाव पडैत अछि | अचार आ चटनीक नाम लैते मुंह मे पानि भरि जाइत अछि | भुत आ बाघ , सिंह शब्दक उच्चारण करिते मोनमे भयक संचार होइत अछि | ई प्रभाव अर्थगत अछि | अतः जाहि शक्तिक द्वारा शब्दक ई अर्थगत प्रभाव पडैत अछि , वएह शब्द – शक्ति कहाबैत अछि | शब्दक अर्थबोध कराबएवला शक्ति सैह शब्द – शक्ति अछि | ओ एक प्रकारक शब्द आ अर्थक समन्वय अछि | शब्दक व्यापार अर्थगत व्यापार अछि |**

**एतावता ज्ञात होइत अछि जे – “ शब्दार्थ – सम्बन्ध: शक्ति, , | “ शब्दक जाहि व्यापारसँ ओकर कोनो अर्थक बोध होइत अछि तकरे शब्द – शक्ति कहल जाइत अछि |**

**जतेक प्रकारक शब्द होएत ओतेक प्रकारक शक्ति सेहो होएत | संस्कृतक आचार्य लोकनिक अनुसार शब्द वाचक , लक्षक ,आ व्यंजक तथा एहि शब्द भेदक आधार पर तीन प्रकारक अर्थ सेहो मानल गेल अछि – वाच्य , लक्ष्य एवं व्यंग्य | शब्द आ अर्थक अनुरुपें शब्दक तीन शक्ति – अभिधा , लक्षणा आ व्यंजना होइत अछि , अभिधा शब्दाश्रित अछि आ लक्षणा एवं व्यंजना अर्थाश्रित |**

**वाचक शब्द - “ साक्षात संकेतितं योअर्थमभिधत्ते स वाचक: “ अर्थात साक्षात संकेतित अर्थक बोधक शब्द वाचक कहल जाइत अछि | संकेत एक प्रकारक मान्यता अछि | एहि शब्द विशेषक ई अर्थ अछि , एकर प्रतिपादक ई शब्द अछि तकरे ज्ञान कें संकेत कहल जाइत अछि एकर तात्पर्य ई अछि जे जाहि शब्दक श्रवण मात्रसँ अर्थ स्पष्ट भए जाए ओ वाचक शब्द कह्बैछ |**

**लक्षक शब्द ओकरा कहल जाइछ जाहि शब्दसँ वाचक शब्दक वाच्यार्थ वा मुख्यार्थ भिन्न अर्थ लक्षित होइत अछि |**

**व्यंजक शब्दक एकटा विशेष वर्ग होइत अछि | एहन शब्द वाचक एवं लक्षक शब्दक वाच्यार्थ एवं लक्ष्यार्थक अतिरिक्त एकटा विशेष प्रकारक अद्भुत अर्थसँ युक्त होइत अछि जकरा व्यंग्यार्थ कहल जाइत अछि | एहि व्यंजक शब्द कें प्रतीयमान , गम्यमान , प्रकाशमान , अभिव्यंग्यमान आदि सेहो कहल जाइत अछि |**

**अभिधा शब्द शक्ति – साक्षात संकेतिक अर्थ कें बताबयबला शब्दक प्रथम शक्तिकें अभिधा कहल जाइत अछि - मुख्येअर्थस्त मुख्यो व्यापारौस्याभिधोच्यते |” आचार्य विश्वनाथक कथन छनि – मुख्य वा प्रथम अर्थक बोधक होएबाक कारणें एहि अभिधा शक्तिकें मुख्य वा अग्रिमा सेहो कहल जाइछ | लोकव्यवहार मे बिना संकेत ग्रहक अर्थक प्रतीत नहि होएबाक कारणें संकेतक सहायता शब्द अर्थ – विशेषक प्रतिपादन करैत अछि | अतः जाहि शब्दक जतय जाहि अर्थमे अव्यवहृत संकेतक ग्रहण होइत अछि ओ शब्द ओहि अर्थक वाचक अछि | एहि अभिधेय अर्थक बोधिकावृत्ति अभिधा कहल जाइत अछि | “ शक्त्याप्रतिपादकत्वमभिधा “ अर्थात वस्तुक साक्षात बोध कराबयवला शक्तिक नाम अभिधा अछि | पंडितराज जगन्नाथ “ शब्द एवं अर्थक परस्पर सम्बन्धकें अभिधा कहैत छथि | “ सभ अर्थक मुँह होएबाक कारण मुख्य अछि | मुकुलभट्ट “ अभिधावृत्तिमातृका “ मे लिखने छथि जे – “ जाहि प्रकारसँ देहक सभ अवयव मे सर्वप्रथम मुँह देखाए पडैत अछि ओहि प्रकारसँ सभ प्रकारक अर्थ सँ पहिने एकरे बोध ह०इत अछि | अतएव मुँहक सदृश मुख्य होएबाक कारण एकरा एनी सभ प्रतीत अर्थक मुँह कहल जाइत अछि | साक्षात संकेतित अर्थे सभ अर्थक मुँह होइत अछि | एकर बोध सभ प्रकारक प्रतीत अर्थसँ**

**पूर्वे भए जाइत अछि | अतः एकरा शब्दक प्रथमा शक्ति कहल जाइत अछि – “ अभिधावृत्ति मातृका |”**

**( क्रमशः )**